Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 4 | (October - December 2026)

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला: धार्मिक आस्था, लोकसंस्कृति एवं सामाजिक समरसता का केंद्र

शिवा कुमार [1], डॉ. अमृता कुमारी [2]

[1] शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2] सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, आर. एन. कॉलेज, हाजीपुर, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

शोध-सार

हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला एशिया के विश्व प्रसिद्ध पशु मेले के रूप में विख्यात है। बिहार के सारण जिले में गंगा-गंडक के संगम पर प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित यह मेला केवल पशु मेले के रूप में नहीं, बल्कि धार्मिक आस्था, तीर्थ-परंपरा, व्यापार, लोक-संस्कृति एवं सामाजिक समरसता का एक केंद्र है। यह मेला हरिहरनाथ मंदिर और गजेंद्र-मोक्ष की पौराणिक स्मृति से जुड़ा हुआ है, जिससे इसकी पहचान एक प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में है। मेला केवल आर्थिक लेन-देन का केंद्र नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संपर्क का एक व्यापक मंच होता है, जहाँ विभिन्न जाति, वर्ग या समुदाय के लोग एक साझा संस्कृति विकसित कर सामाजिक समरसता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी सन्दर्भ में सोनपुर मेले का अपना एक विशिष्ट महत्व है, जो भारतीय संस्कृति एवं लोक परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय समाज को गतिशीलता प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध आलेख सोनपुर मेले की धार्मिक पृष्ठभूमि, बाजार, लोक-सांस्कृतिक भागीदारी तथा बदलते समय में इसकी सामाजिक भूमिका के विश्लेषण पर केंद्रित है।

मुख्य शब्द: हरिहरक्षेत्र, सोनपुर मेला, कार्तिक पूर्णिमा, गजेंद्र-मोक्ष, बाजार, तीर्थ, सामाजिक समरसता, लोक-संस्कृति।

मूल आलेख

बिहार के सारण जिले में गंगा-गंडक के संगम पर आयोजित हरिहरक्षेत्र सोनपुर मेला भारतीय लोक-जीवन की दीर्घ परंपरा का प्रतीक है। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के पवित्र स्नान और हरिहरनाथ मंदिर में पूजा से शुरू होने वाला यह मेला गजेंद्र-मोक्ष की पौराणिक स्मृति से जुड़ा हुआ है। यह मेला धार्मिक आस्था, आर्थिक गतिविधियाँ, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ और सामाजिक संबंधों का एक लोक-उत्सव है, जिसमें विभिन्न जातियों, वर्गों और पेशों के लोग एक साथ शामिल होते हैं। इस मेले की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी बहुस्तरीय सामाजिक प्रकृति है। यहाँ एक ही परिसर में तीर्थयात्री, व्यापारी, कलाकार और ग्रामीण समाज अपनी-अपनी ज़रूरतों के साथ इकट्ठा होते हैं। इस प्रकार, इस मेले में दैनिक जीवन, घर, गाँव और जाति की सामान्य सीमाओं को तोड़कर व्यक्ति एक व्यापक और साझा लोक-समुदाय का हिस्सा बनता है। इसी परिप्रेक्ष्य में आनंद ए. यांग का बिहार के बाजारों और मेलों पर अध्ययन उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने रेखांकित किया है कि मेला केवल वस्तुओं के विनिमय का स्थान नहीं है, बल्कि वह एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र भी निर्मित करता है, जहाँ सामान्य जीवन से अलग प्रकार के सामाजिक संबंध और सामूहिक अनुभव विकसित होते हैं।[1] अतः सोनपुर मेला भी इस दृष्टिकोण से न केवल बिहार के लिए बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी एक अलग पहचान रखता है। जहाँ पुराणों में इसकी धार्मिक मान्यताओं की चर्चा मिलती है, वहीं चंद्रगुप्त मौर्य के शासन काल से लेकर मुगल काल तक यह मुख्य रूप से एक धार्मिक एवं व्यापारिक केंद्र के रूप में विद्यमान रहा। हालांकि ब्रिटिश काल में इस मेले को अधिक व्यवस्थित कर आधुनिक रूप प्रदान किया गया, जो आगे चलकर एशिया

के सबसे बड़े पशु मेले के रूप में विकसित हुआ। साथ ही बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य से प्रभावित यह मेला आज भी अपनी जीवंतता को बरकरार रखता है और लोक-संस्कृति का केंद्र बना हुआ है।

हरिहरक्षेत्र के पौराणिक एवं धार्मिक आख्यान:

सोनपुर की धार्मिक पहचान मुख्यतः हरिहरनाथ मंदिर और कार्तिक पूर्णिमा की स्नान परंपरा से जुड़ी हुई है। 'हरिहर' नाम अपने भीतर ही धार्मिक समन्वय की एक महत्वपूर्ण अवधारणा को समाहित किए हुए है। 'हरि' अर्थात विष्णु और 'हर' अर्थात शिव, इन दोनों देव–परंपराओं का संयुक्त स्मरण इस क्षेत्र की धार्मिक चेतना को एक विशिष्ट रूप प्रदान करता है। 'पद्म पुराण' के अनुसार, खुद भगवान् ब्रह्मा ने हरिहर क्षेत्र में हरि और हर की संयुक्त प्रतिमा की स्थापना की थी। इसे एक श्लोक के माध्यम से समझा जा सकता है:

ब्रह्मा स्थापितो तत्र यज्ञ हरिहर व्रभो,

महाव लातिवलिवनों नाम्रा देवो व भवतुः

[ब्रह्मा ने हरिहर की प्राण-प्रतिष्ठा एक यज्ञ के दौरान की थी। यह प्रतिमा अति प्राचीन है। देश के किसी दूसरे भाग में इस तरह की कोई अन्य प्रतिमा नहीं है।][2]

पद्म पुराण के उत्तर खण्ड में स्पष्ट लिखा है कि हरिहरक्षेत्र में कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान करने से हजार अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है।[3] यह स्नान केवल मोक्ष के लिए नहीं है, बल्कि सामाजिक मिलन के लिए भी है।

गजेंद्र–मोक्ष की कथा

पुराणों में वर्णित गजेन्द्र-मोक्ष की कथा में गजेन्द्र और ग्राह दोनों के पूर्वजन्म का विशेष महत्व है। कथा के अनुसार, गजेन्द्र अपने पूर्वजन्म में इन्द्रद्युम्न नामक राजा था। वह भगवान विष्णु का अनन्य भक्त था, किंतु एक अवसर पर अगस्त्य ऋषि के आगमन पर उनका उचित सत्कार नहीं कर पाया। इसे ऋषि ने अहंकार और अनादर माना तथा उसे हाथी की योनि में जन्म लेने का शाप दे दिया। दूसरी ओर, हूहू नामक गंधर्व ने ऋषि देवल के साथ अनुचित व्यवहार किया था, जिसके कारण ऋषि के शाप से वह ग्राह (मगर) बन गया।[4]

अगले जन्म में इन्द्रद्युम्न एक विशाल हाथी गजेन्द्र के रूप में जन्मा और हाथियों के झुड का राजा बना। एक दिन वह अपने झुड के साथ एक सुंदर सरोवर में जलक्रीड़ा करने पहुँचा। उसी सरोवर में रहने वाले ग्राह ने अचानक उसका पैर पकड़ लिया। गजेन्द्र ने अपनी पूरी शक्ति से स्वयं को छुड़ाने का प्रयास किया, किंतु लंबे संघर्ष के बाद वह अत्यंत कमजोर पड़ने लगा। जब सांसारिक शक्ति और अपने साथियों का सहारा भी निष्फल हो गया, तब गजेन्द्र ने भगवान विष्णु का स्मरण किया। उसने अपनी सूँड में कमल धारण कर भगवान के चरणों में समर्पण करते हुए स्तुति की।[5]

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।

पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥[6]

गजेन्द्र की पुकार सुनकर भगवान विष्णु गरुड़ पर आरूढ़ होकर वहाँ पहुँचे और सुदर्शन चक्र से ग्राह का वध कर गजेन्द्र को मुक्त किया। भगवान के स्पर्श से ग्राह अपने पूर्वजन्म के गंधर्व स्वरूप में लौट आया और गजेन्द्र को भी शाप से मुक्ति मिली। इस प्रकार दोनों को भगवान की कृपा से मोक्ष प्राप्त हुआ। यही प्रसंग "गजेन्द्र-मोक्ष" के नाम से प्रसिद्ध

है।[7] गजेंद्र–मोक्ष यहाँ केवल धार्मिक आख्यान नहीं रह जाता, बल्कि स्थानीय सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा बन जाता है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए संगम, स्नान, हरिहरनाथ और गजेंद्र–मोक्ष की कथा एक–दूसरे से जुड़ी हुई धार्मिक अनुभूति का निर्माण करते हैं।[8]

वाणिज्य व पशु व्यापार का केंद्र

मेलों के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार डी.डी. कोसाम्बी ने लिखा है कि भारत में मेले बाजार नहीं, बल्कि उत्पादन और संस्कृति के मिलन केंद्र रहे हैं।[9] सोनपुर मेला भी इसी ऐतिहासिक परंपरा का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसका इतिहास लगभग 2000 वर्ष पुराना माना जाता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी इस क्षेत्र का उल्लेख किया है। परन्तु इसका लिखित इतिहास 19वीं सदी से अधिक मिलता है, जब फ्रांसिस बुकानन ने 1812-13 में सारण जिले का सर्वेक्षण किया। बुकानन ने लिखा कि हरिहर क्षेत्र का मेला धार्मिक दिखता है, पर इसका वास्तविक महत्व व्यापारिक है और यहाँ लगभग हजारों घोड़े पंजाब और काबुल से आते हैं। इसी प्रकार सारण जिला गजेटियर 1930 में कहा गया है कि सरकार को इस मेले से चुंगी के रूप में 15,000 रुपये की आय होती है और यह मेला अब मुख्यतः पशु मेला बन गया है।[10] ये विवरण मेले के आर्थिक पक्ष को प्रमुखता देते हैं, लेकिन स्थानीय समाज में इसकी पहचान आज भी धार्मिक आस्था से गहराई से जुड़ी है। कार्तिक पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं का संगम में स्नान करना और फिर मेले में जाना इस परंपरा को जीवंत रखता है। इस प्रकार, सोनपुर में धर्म और व्यापार एक-दूसरे के पूरक हैं, जबकि नदी का तट आस्था, लोकविश्वास और सामुदायिक स्मृतियों का जीवंत सांस्कृतिक स्थल बन जाता है।

यहीं से सोनपुर मेले में सामाजिक समरसता का स्वरूप उभर कर आता है। धार्मिक आस्था लोगों को एक साझा सांस्कृतिक पहचान से जोड़ती है, वहीं मेले में अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाले लोगों का मेल-जोल इस जुड़ाव को और गहरा करता है। पशु व्यापार, विभिन्न बाजार और पेशों से जुड़े लोगों की भागीदारी ने इसे केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि ग्रामीण समाज के लिए आपसी संपर्क, लेन-देन और संवाद का एक महत्त्वपूर्ण मंच बना दिया। यहाँ स्थानीय से लेकर विदेशी स्तर के पशुपालक, लोहार, बढ़ई, कुम्हार और हलवाई जैसे विभिन्न पेशागत समुदायों के लोग अपने उत्पादों के साथ जुटते हैं। पशु–व्यापार से लेकर स्थानीय वस्तुओं, खाद्य–सामग्री, हस्तशिल्प और दैनिक उपयोग की चीज़ों तक अनेक प्रकार के लेन–देन मेले की अर्थव्यवस्था का हिस्सा रहे हैं।[11] सोनपुर मेले में पशुओं की खरीद-बिक्री के लिए अलग-अलग बाजार लगते हैं, जिनमें हाथी बाजार, गाय-बैल बाजार, भैंस बाजार, घोड़ा बाजार, ऊँट बाजार और चिड़िया बाजार प्रमुख हैं। इन मंडियों में हाथी, घोड़े, गाय, बैल, भैंस, ऊँट, बकरी, भेड़ तथा विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों का व्यापार होता है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के एक अनुमान के अनुसार, मेले में लगभग 30,000 गाय-बछड़ों, बैलों और भैंसों, 10,000 घोड़ों तथा 2,000 हाथियों का व्यापार होता था। हाथी मुख्यतः असम और बंगाल से, जबकि घोड़े काठियावाड़, अफगान और मारवाड़ सहित विभिन्न क्षेत्रों से लाए जाते थे। दूरस्थ क्षेत्रों से भी व्यापारी और खरीदार यहाँ पहुँचते थे। मेला अवधि के दौरान ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी, स्थानीय जमींदार, संभ्रांत राजा-महाराजा, तथा देश-विदेश से आए व्यापारी एवं आगंतुक सभी सामाजिक और पदानुक्रमित भेदों को भुलाकर एक ही परिसर में सह-अस्तित्व के साथ निवास करते थे। इस प्रकार मेला ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अलग-अलग हिस्सों को एक ही सार्वजनिक स्थल पर जोड़ने का काम करता था। आनंद ए. यांग ने सोनपुर मेले के बाजारों का वर्णन करते हुए बताया है कि यहाँ पशुओं के साथ-साथ बर्तन, कपड़े, फर्नीचर, जूते, मसाले, खिलौने, संगीत वाद्य और अनेक प्रकार की हस्तनिर्मित वस्तुओं का

व्यापार होता था। इस दृष्टि से मेला विभिन्न पेशागत समूहों के बीच विचारों के प्रसार, आर्थिक निर्भरता और सामाजिक संपर्क का माध्यम बनता था।[12]

लोक–संस्कृति एवं सामाजिक समरसता का केंद्र

सोनपुर मेले में अंग्रेज अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय राजा-महाराजा और जमींदार भी बड़ी संख्या में आते थे। उनकी उपस्थिति का उद्देश्य केवल व्यापारिक गतिविधियों में भाग लेना नहीं था, बल्कि मेले में आयोजित खेल-कूद (घुड़दौड़, हाथीदौड़, कुश्ती, क्रिकेट, पोलो, जिम्नास्टिक, बॉलरूम डांस आदि), पशु प्रदर्शन (विदेशी घोड़ा, हाथी) और अन्य मनोरंजक आयोजनों जैसे नाच, नौटंकी, गायन-वादन आदि का आनंद लेना भी था।[13] सोनपुर मेले में नौटंकी, लोकनाट्य और थिएटर की परंपरा ने मनोरंजन के साथ-साथ लोकजीवन और सामाजिक संबंधों को भी अभिव्यक्ति दी। गुलाब बाई जैसी महिला कलाकारों ने अपनी प्रतिभा से उस समय मंच पर महिलाओं की उपस्थिति को पहचान दिलाई, जब सार्वजनिक कला-जगत में उनका स्थान सीमित था। इन प्रस्तुतियों में लोककथाओं, प्रेम, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक जीवन के प्रसंगों के माध्यम से अलग-अलग वर्गों के लोग एक साथ जुड़ते थे। इस तरह, मेले का रंगमंच बिहार की लोकसंस्कृति, महिलाओं की कलात्मक भूमिका और विविध समुदायों के साझा सांस्कृतिक अनुभव का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बना। इस प्रकार, धार्मिक आस्था और व्यापार के साथ मनोरंजन तथा प्रशासनिक गतिविधियों ने भी मेले के स्वरूप को प्रभावित किया। धीरे-धीरे सोनपुर मेला विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों के मनोरंजन, आपसी संपर्क, मेल-जोल और सांस्कृतिक सहभागिता का एक महत्त्वपूर्ण साझा स्थल बन गया।

एक साक्षात्कार के दौरान मेले में कश्मीर से आने वाले एक मुस्लिम ऊनी वस्त्र व्यापारी सेबीर अहमद ने बताया कि "वे अपने नाना के साथ बचपन से ही व्यापार के सिलसिले में मेले मे आते रहे हैं। वे और उनके साथ आए सभी व्यापारी दुकान लगाने से पहले हरिहरनाथ मंदिर में पूजा-अर्चना करते हैं और व्यापार की सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं।"[14] यह अनुभव दर्शाता है कि सोनपुर मेला केवल व्यापार का केंद्र नहीं है, बल्कि विभिन्न समुदायों के लोगों को धार्मिक आस्था और सामाजिक संपर्क के स्तर पर भी जोड़ता है। इस प्रकार यहाँ व्यापार, आस्था और सामाजिक सहभागिता एक साथ दिखाई देती है।

बदलते परिप्रेक्ष्य में विज्ञान व तकनीकी के विकास, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972, बिहार से श्रमिकों का प्रवास व वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण सोनपुर मेले के स्वरूप में कई परिवर्तन आए हैं। परिवहन, बाजार, प्रशासनिक व्यवस्था और संचार के आधुनिक साधनों ने इसकी गतिविधियों को प्रभावित किया है। पशु व्यापार का महत्त्व भी पहले की तुलना में बदला है। इसके बावजूद मेले की धार्मिक पहचान आज भी बनी हुई है। कार्तिक पूर्णिमा, हरिहरनाथ मंदिर और गंगा-गंडक संगम आज भी इसकी परंपरा के प्रमुख आधार हैं। वहीं व्यावसायिक प्रदर्शनियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, मनोरंजन और पर्यटन सुविधाओं ने इसे नए आयाम दिए हैं।[15] सरकारी स्तर पर भी इसे बिहार की सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इन बदलावों से स्पष्ट होता है कि सोनपुर मेला अपनी पुरानी परंपराओं को साथ लेकर समय के अनुसार आगे बढ़ा है। इसका बाहरी स्वरूप भले ही बदला हो, लेकिन लोगों के आपसी मेल-जोल, साझा अनुभव और सामुदायिक जुड़ाव का महत्त्व आज भी बना हुआ है।

निष्कर्षतः सोनपुर मेला बिहार की एक ऐसी सांस्कृतिक विरासत है, जो विविधताओं के बीच लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है। यहाँ सामाजिक समरसता का अर्थ सामाजिक असमानताओं का पूरी तरह समाप्त हो जाना नहीं, बल्कि अलग-अलग पृष्ठभूमियों के लोगों का साझा अनुभवों में भाग लेना है। कार्तिक पूर्णिमा का स्नान लोगों को धार्मिक आस्था से जोड़ता है, जबकि बाजार विभिन्न क्षेत्रों, पेशों, वर्गों और समुदायों के लोगों के बीच संपर्क का अवसर

प्रदान करता है। इस तरह धर्म, व्यापार और लोक-संस्कृति मिलकर मेले को एक व्यापक सामाजिक अनुभव बनाते हैं। 'हरिहर' की संयुक्त धार्मिक अवधारणा भी समन्वय और सह-अस्तित्व की भावना को अभिव्यक्त करती है। आज, जब सामाजिक विभाजन की चर्चा लगातार होती है, सोनपुर मेला याद दिलाता है कि आपसी जुड़ाव केवल नारों से नहीं, बल्कि साथ रहने, मिलने-जुलने और साझा अनुभवों से विकसित होता है। बदलते समय के बावजूद लोगों को एक साझा सांस्कृतिक मंच प्रदान करना ही इस मेले की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

संदर्भ सूची

1 आनंद ए. यांग, *बाज़ार इंडिया: मार्केट्स, सोसाइटी एंड द कॉलोनियल स्टेट इन बिहार*, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1998, पृ.— 123–124

2 सुबोध कुमार नंदन, *बिहार के मेले*, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ.— 22-23

3 *पद्म पुराण*, उत्तर खंड, 124/20, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ.— 457

4 *श्रीमद्भागवतमहापुराण*, प्रथम खंड, अष्टम स्कंध, अध्याय 4, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ.— 919-921

5 वही, अध्याय 2, पृ.— 909-913

6 श्रीमद्भागवतमहापुराण, स्कंध 8, अध्याय 3, श्लोक 2, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ.— 914

7 वही, अध्याय 3, पृ.— 913-919

8 साक्षात्कार, प्रो. (डॉ.) गजेन्द्र प्रसाद सिंह, उम्र- 73 साल, पिता- स्व. मोती सिंह, स्थान- हाजीपुर, तिथि- 15 जून 2026, समय- 01:00 pm

9 डी. डी. कोसांबी, *मिथ एंड रियालिटी: स्टडीज इन द फॉरमेशन ऑफ इंडियन कल्चर*, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 1962, पृ.— 82

10 एल. एस. एस. ओ'मैली एवं ए. पी. मिडलटन, *बिहार एवं उड़ीसा जिला गजेटियर: सारण*, सुपरिंटेंडेंट गवर्नमेंट प्रिंटिंग बिहार एंड उड़ीसा, पटना, 1930, पृ.— 67

11 आनंद ए. यांग, *द लिमिटेड राज: एग्रेरियन रिलेशंस इन कोलोनियल इंडिया, सारण डिस्ट्रिक्ट, 1793-1920*, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, बरकले और लॉस एंजिल्स, 1989, पृ.— 13

12 आनंद ए. यांग, *बाज़ार इंडिया*, पृ.— 148-149

13 हैरी ई. एबॉट, *सोनपुर रिमिनिसेंसेज़: ईयर्स 1840–96*, द स्टार प्रेस, कलकत्ता, 1896, पृ.— 1-2

14 साक्षात्कार, सेबीर अहमद (ऊनी वस्त्र व्यापारी), उम्र- 55 साल, नाना- अब्दुल मजीद, निवास स्थान— अनंतनाग, जम्मू & कश्मीर, दिनांक 29/01/2026, समय- 11.00 am